

गुवाहाटी में 5 राज्यपाल एवं 2 मुख्यमंत्रियों की उपस्थिति में हुआ राज्यपाल श्री नाईक की पुस्तक के असमिया संस्करण का लोकार्पण

भाषायें जोड़ने का काम करती हैं - श्री नाईक

**संवेदनशील मन जनरोष का इंतजार नहीं करता बल्कि पहले ही समाधान करता है -
राज्यपाल आसाम**

आसाम के लोग पुस्तक 'चरैवेति!चरैवेति!!' से प्रेरणा प्राप्त करेंगे - मुख्यमंत्री आसाम

मनुष्य अपने कर्मों से बड़ा बनता है - मुख्यमंत्री महाराष्ट्र

लखनऊ: 6 जुलाई, 2019

गुवाहाटी के श्रीमंत शंकरदेव कला क्षेत्र प्रेक्षागृह में आज उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक की पुस्तक 'चरैवेति!चरैवेति!!' के असमिया संस्करण के लोकार्पण में असम एवं मिजोरम के राज्यपाल श्री जगदीश मुखी, असम के मुख्यमंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फडणवीस, सिक्किम के राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद, अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल डॉ० बी०डी० मिश्रा, मेघालय के राज्यपाल श्री तथागत राँय, उत्तर प्रदेश सरकार के ग्राम्य विकास एवं स्वास्थ्य राज्यमंत्री डॉ० महेन्द्र सिंह, चाणक्य वार्ता के संरक्षक श्री लक्ष्मी नारायण भाला, चाणक्य वार्ता के सम्पादक एवं दिव्य परिवार के अध्यक्ष डॉ० अमित जैन सहित बड़ी संख्या में विशिष्टजन उपस्थित हुये। डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर राज्यपाल श्री नाईक सहित अन्य महानुभावों ने डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर माल्यार्पण कर अपनी आदरांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में सभी अतिथियों का सम्मान अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह व पुष्प गुच्छ भेंट कर किया गया। इस अवसर पर चाणक्य वार्ता पूर्वोत्तर राज्यों पर केन्द्रित विशेषांक का विमोचन भी हुआ।

राज्यपाल श्री नाईक ने लेखक की भूमिका में बोलते हुये कहा कि भाषायें जोड़ने का काम करती हैं। यह सुखद संगम आज पुस्तक विमोचन समारोह में देखने को मिल रहा है। पुस्तक पर प्रकाश डालते हुये राज्यपाल ने बताया कि उन्होंने मराठी दैनिक सकाल में प्रकाशित अपने संस्मरणों का संकलन किया है, जिसे पुस्तक 'चरैवेति!चरैवेति!!' का रूप दिया गया है। पुस्तक 'चरैवेति!चरैवेति!!' का अब तक मराठी सहित हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, गुजराती, संस्कृत, सिंधी, अरबी, फारसी तथा जर्मन भाषा और ब्रेल लिपि में हिन्दी, अंग्रेजी एवं मराठी में लोकार्पण हुआ है। अब असमिया भाषा में प्रकाशन होने से पुस्तक 11 भाषाओं तथा ब्रेल लिपि 3 भाषाओं में पाठकों के लिये उपलब्ध है। किसी संस्मरणात्मक पुस्तक का इतनी भाषाओं में प्रकाशन एक उपलब्धि के समान है। उन्होंने चरैवेति!चरैवेति!! के श्लोक का मर्म बताते हुये कहा कि जीवन में निरंतर चलने वाले को ही सफलता प्राप्त होती है।

श्री नाईक ने अपने राजनैतिक जीवन में किये गये समाधान देने वाले कार्यों का उल्लेख करते हुये बताया कि आजादी के 45 वर्ष बाद संसद में पहली बार 'जन-गण-मन' एवं 'वंदे मातरम्' का गायन उनके प्रयास से प्रारम्भ हुआ। बाम्बे को उसका मूल नाम मुंबई कराया जिसके बाद अनेक स्थानों के नाम परिवर्तित हुये। कारगिल युद्ध में 439 शहीद सैनिकों के परिजनों को सरकारी खर्च पर पेट्रोल पम्प एवं गैस एजेन्सी का आवंटन कराया। सांसद निधि की शुरुआत करायी। कैंसर रोग पर विजय प्राप्त कर बोनस में मिले जीवन को समाज के लिये समर्पित किया। उनकी सफलता में परिवार का बहुत सहयोग रहा। उन्होंने कहा कि पेट्रोलियम मंत्री रहते आसाम आने की स्मृतियाँ आज भी उनके लिये जीवंत हैं। भारत में सबसे ज्यादा कच्चा तेल आसाम में ही निकलता है। इसे तेल का राज्य माना जाता था। उन्होंने पेट्रोलियम मंत्री के रूप में यहां के तेल रिफाइनरी के काम को जिन्दा किया और उसे आगे बढ़ाया। लेकिन आयल निर्माण के बाद राज्य सरकार को जो रायल्टी मिलती थी, वह बहुत कम थी, जिसे उन्होंने बढ़ाया।

मुख्य अतिथि एवं आसाम के राज्यपाल श्री जगदीश मुखी ने कहा कि संवेदनशील मन जनरोष का इंतजार नहीं करता बल्कि पहले ही समाधान करता है। ऐसे ही संवेदनशील प्रकृति के हैं श्री नाईक। एक आदर्श नेता का आचरण कैसा होता है इसको जानना है तो पुस्तक 'चरैवेति!चरैवेति!!' पढ़िये।

आसाम के मुख्यमंत्री श्री सोनोवाल ने सभी अतिथि राज्यपालों एवं मुख्यमंत्रियों का स्वागत करते हुये कहा कि सुखद संयोग है कि आज डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती है और आज ही पुस्तक का विमोचन हो रहा है। पुस्तक में प्रस्तावना लिखवाने पर श्री नाईक का अभिनन्दन किया तथा कहा कि उन्हें प्रसन्नता है कि उन्हें ऐसे अनुकरणीय मार्गदर्शक की पुस्तक में सम्मिलित होने का अवसर मिला। उन्होंने कहा कि आसाम के लोग पुस्तक 'चरैवेति!चरैवेति!!' से प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फडणवीस ने कहा कि पुस्तक प्रेरणादायक है। इससे पूर्व पुस्तक विमोचन के दो समारोह में उपस्थित हुआ था और आगे यदि अन्य भाषा में पुस्तक का प्रकाशन होता है तो वहाँ भी जरूर उपस्थित रहूंगा। 'चरैवेति!चरैवेति!!' केवल पुस्तक नहीं बल्कि ऐसे जीवन का प्रयास है जिसने विचारों की प्रतिबद्धता के आधार पर अपना स्थान बनाया है। श्री नाईक ने हर जिम्मेदारी को पूरी ईमानदारी से निभाया है। कृष्णपीड़ितों, मछुवारों और महिलाओं के लिये किये गये उनके प्रयास अद्भुत हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य अपने कर्मों से बड़ा बनता है।

राज्यपाल मेघालय श्री तथागत राय ने कहा कि श्री नाईक की पुस्तक 11 भाषाओं में प्रकाशित हुई है। उनके द्वारा किये गये कार्य सराहनीय हैं। पुस्तक का प्रकाशन बांग्ला भाषा में भी होना चाहिए। उन्होंने कहा कि पुस्तक पढ़कर लगता है कि किसी व्यक्ति विशेष की जीवनी पढ़ रहे हैं।

अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल डॉ० बी०डी० मिश्रा ने श्री नाईक को बधाई देते हुये कहा कि उनकी कार्यशैली विशिष्ट है। असम भाषा में पुस्तक 'चरैवेति!चरैवेति!!' का प्रकाशन होने से पूर्वोत्तर भारत के निवासी श्री नाईक के जीवन से प्रेरणा प्राप्त करेंगे। उन्होंने कहा कि पुस्तक का प्रकाशन अन्य भारतीय भाषाओं में भी होना चाहिए।

सिक्किम के राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद ने कहा कि जीवन का लक्ष्य बढ़ते रहना होना चाहिए। श्री नाईक प्रेरणा स्रोत हैं। उन्होंने कहा कि उनका जीवन संघर्ष और सेवा का पर्याय है। उत्तर प्रदेश के मंत्री डॉ० महेन्द्र सिंह ने कहा श्री नाईक में युवाओं जैसी ऊर्जा है, वे क्रांति के प्रतीक हैं। उन्होंने हर क्षेत्र व वर्ग के लोगों के लिये काम किया। कृष्णपीड़ितों को निर्वहन भत्ता तथा 3,791 कृष्णपीड़ितों को 46 करोड़ रुपये से बनने वाले पक्के आवास दिलाने में महत्वपूर्ण प्रयास किया है।

कार्यक्रम में चाणक्य वार्ता समूह ने स्वागत उद्बोधन देते हुये बताया कि राज्यपाल श्री नाईक ने एक मुलाकात के दौरान उन्हें पुस्तक भेंट की थी। उन्होंने पुस्तक पढ़ी। पुस्तक सामाजिक जीवन में कार्य करने वालों के लिये अत्यंत प्रेरणादायी है। उन्होंने राज्यपाल श्री नाईक से पुस्तक के असमिया भाषा में अनुवाद की बात कही थी जिससे यह अधिक से अधिक असमी भाषी लोगों तक पहुंच सके और उन्हें प्रेरणा प्रदान करे।

इस अवसर पर श्री लक्ष्मी नारायण भाला तथा श्री अवनीश कुमार ने भी अपने विचार रखे।

अंजुम/ललित/राजभवन (239/9)



